वर्तमान संदर्भ में तत्त्वार्थसूत्र की उपयोगिता

Sunayna Jain

Teerthanker Mahaveer University

किसी भी देश या समाज की संस्कृति एवं परंपरा को यदि गहराई से समझना हो तो वहां का साहित्य एक बहुत बड़ी भूमिका निभाता है इसीलिए कहा जाता है कि 'साहित्य समाज का दर्पण है'। समूचे विश्व में भारतवर्ष भी प्राचीन साहित्य से संपन्न एवं समृद्ध देशों में से एक है। साहित्य के आधार पर ही बीसवीं सदी के हिंदी साहित्य के विद्वानों ने काल का विभाजन भी किया है।प्राचीन काल से ही जैन दर्शन में साहित्य सृजन की परंपरा रही है।इसी साहित्य सृजन की श्रृंखला में जैन दर्शन में प्राकृत, अपभ्रंश संस्कृत एवं हिंदी में एक विशाल साहित्य पाया जाता है। जिसमें से लगभग प्रथम या द्वितीय शताब्दी के आसपास में लिखा गया संस्कृत भाषा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण साहित्य हमारे बीच में उपलब्ध है जिसका नाम है। 'तत्त्वार्थसूत्र' जिसका अपरनाम मोक्षशास्त्र भी है। यह जैन दर्शन साहित्य में संस्कृत भाषा का आदि ग्रंथ माना जाता है।

जिसके रचयिता आचार्य श्री उमास्वामी है जिन्हें उमास्वाति या गृद्धपिच्छ के नाम से भी जाना जाता है। आचार्यश्री प्रथम शताब्दी के जगतगुरु आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के पट्टशिष्य थे।

तत्त्वों का निरूपण एवं सूत्र रूप में संपूर्ण शास्त्र गुम्फित होने से इसका तत्त्वार्थसूत्र नाम पड़ा। तत्त्वार्थसूत्र का प्रारंभ मोक्ष मार्ग के उपदेश से होकर इसका अंत मोक्ष के उपदेश के साथ होता है जान पड़ता है कि यह नाम इसी कारण से अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है। ऐसा भी माना जाता है कि तत्त्वार्थसूत्र लिखने की प्रेरणा उनको उत्तराध्ययन सूत्र ही के 28 वें अध्याय, जिसका नाम मोक्षमार्ग है प्राप्त हुई।उसमें मोक्ष प्राप्ति के बारे में बतलाया गया है।
प्रस्तुत ग्रंथ 10 अध्यायों में विभक्त है। जिसमें कुल मिलाकर 357 सूत्र हैं। किंतु श्वेतांबर परंपरा में इनकी सूत्र संख्या 344 है।

जैन दर्शन के मुख्य आधार तीन रत्न, छह द्रव्य,सात तत्त्व,नव पदार्थ माने जाते हैं। इन सभी का प्रस्तुत सूत्र ग्रंथ में व्याख्यान किया गया है। ऐसी मान्यता भी है कि इसके पठन-पाठन से एक उपवास का फल प्राप्त होता है।
कहते हैं यह जो तत्त्वार्थसूत्र है वह आगम साहित्य के महल में प्रवेश करने का प्रवेशद्वार है। यदि हम तत्त्वार्थसूत्र को पढ़ लेते हैं इसकी गहराई को समझ लेते हैं, इनके सूत्रों का अर्थ हमारे ध्यान में आने लग जाता है तो वह गहराई हमें कोई सा आगम भी पढ़ने जाते हैं तो हम उसकी गहराई समझ पाते हैं, क्योंकि हमारी दृष्टि खुल जाती है, यदि एक बार हमारी दृष्टि खुल गयी तो सारे आगम सृष्टि हमारे सामने खुलने लगते हैं, सब कुछ सहज, सरल, सुगम लगने लगता है।

कुछ शास्त्र ऐसे होते हैं जिनमें ज्ञेयमीमांसा का वर्णन होता है। ज्ञेय मीमांसा का मतलब है ज्ञान से। कुछ शास्त्र ऐसे होते हैं जिनमें चरित्र का वर्णन अधिक होता है, मतलब हमारी क्रियाओं का वर्णन, कुछ आचरण की बात की जाती है जैसे हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए, हमारी क्रियायें कैसी होनी चाहिए। श्रावक और मुनियों की चर्चा किस प्रकार की होनी चाहिए। इस तरह इन सबका वर्णन अलग-अलग ग्रन्थों में पाया जाता है। ऐसा अभी तक कोई शास्त्र नहीं था जिसमें इन तीनों का वर्णन एक साथ किया गया हो। भगवान महावीर ने अनेकांत का उपदेश दिया। उन्होंने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने ज्ञान, ज्ञेय और चारित्र का वर्णन किया हुआ है। ज्ञेय से दर्शन का विषय ले

सकते हैं। ज्ञान, दर्शन और चारित्र तीनों बातों का उन्होंने वर्णन किया। तो जो उमास्वामीजी हैं उन्होंने तत्वार्थसूत्र में ज्ञान, दर्शन और चारित्र की परिरूपणा सिर्फ दस अध्यायों में ही कर दी। इस ग्रन्थ की विशेषता बताते हुए लोग यह भी कहते हैं कि आँख की जो काली पुतली होती है उस छोटी सी पुतली से हम सारा संसार देख सकते हैं उसी प्रकार इस छोटे से ग्रन्थ की दृष्टि यदि हमें मिल जाती है तो हम उसके द्वारा पूरा आगम या आगम के भण्डार को देख सकते हैं। इसमें किसी भी प्रकार की साम्प्रदायिक बातें नहीं है। वरन् इसमें शुद्ध तत्व की बातें बतायी गयी हैं।

तत्वार्थसूत्र के दसों अध्यायों का सार-

कुछ शास्त्र ऐसे होते हैं जिनमें ज्ञेयमीमांसा का वर्णन होता है। ज्ञेय मीमांसा का मतलब है ज्ञान से। कुछ शास्त्र ऐसे होते हैं जिनमें चरित्र का वर्णन अधिक होता है, मतलब हमारी क्रियाओं का वर्णन, कुछ आचरण की बात की जाती है जैसे हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए, हमारी क्रियायें कैसी होनी चाहिए। श्रावक और मुनियों की चर्चा किस प्रकार की होनी चाहिए। इस तरह इन सबका वर्णन अलग-अलग ग्रन्थों में पाया जाता है। ऐसा अभी तक कोई शास्त्र नहीं था जिसमें इन तीनों का वर्णन एक साथ किया गया हो। भगवान महावीर ने अनेकांत का उपदेश दिया। उन्होंने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने ज्ञान, ज्ञेय और चारित्र का वर्णन किया हुआ है। ज्ञेय से दर्शन का विषय ले सकते हैं। ज्ञान, दर्शन और चारित्र तीनों बातों का उन्होंने वर्णन किया। तो जो उमास्वामीजी हैं उन्होंने तत्वार्थसूत्र में ज्ञान, दर्शन और चारित्र की परिरूपणा सिर्फ दस अध्यायों में ही कर दी। इस ग्रन्थ की विशेषता बताते हुए लोग यह भी कहते हैं कि आँख की जो काली पुतली होती है उस छोटी सी पुतली से हम सारा संसार देख सकते हैं उसी प्रकार इस छोटे से ग्रन्थ की दृष्टि यदि हमें मिल जाती है तो हम उसके द्वारा पूरा आगम या आगम के भण्डार को देख सकते हैं। इसमें किसी भी प्रकार की साम्प्रदायिक बातें नहीं है। वरन् इसमें शुद्ध तत्व की बातें बतायी गयी हैं।

तत्वार्थसूत्र दसों अध्यायों का सार-

1.प्रथम अध्याय में ज्ञान मीमांसा का वर्णन है।

2.द्वितीय अध्याय में जीव तत्व का वर्णन किया गया है।

3. तृतीय अध्याय में अधोलोक, मध्यलोक का वर्णन है।

4. चतुर्थ में उर्ध्वलोक का वर्णन है।

5. पांचवें में अजीव तत्व/ पंचास्तिकाय का वर्णन है।

6. छठे में चारित्र की मीमांसा बताई गई है एवं आश्रव के स्वरूप को बतलाया गया है।

7. सातवें अध्याय में श्रावक के बारह व्रतों का वर्णन किया गया है साथ ही श्रावक के व्रत उनके अधिकार और भावनाओं का भी वर्णन किया गया है। 8.आठवें अध्याय में आठों कर्मों की प्रकृति एवं कर्मों के बंध का वर्णन किया गया है।

9. नवें अध्याय में संवर और निर्जरा तत्वों का वर्णन किया गया है एवं 12 प्रकार के तप का वर्णन है।

10. दसवें अध्याय में मोक्ष तत्व का वर्णन है जिसमें 13वें 14वे गुणस्थान की अवस्था का वर्णन,शुक्ल ध्यान की अवस्था का वर्णन और मोक्ष में सिद्ध अवस्था में कैसे पहुंचते हैं उसका वर्णन किया गया है।

पहले अध्ययन में जो ज्ञान का वर्णन किया गया है उसमें साथ ही साथ उन्होंने बताया है कि मोक्ष मार्ग की परीरूपणा की गयी है, ज्ञान की विवेचना है उसमें नय और प्रमाण का भी विषय आता है, मति ज्ञान आदि पाँच ज्ञान का भी उल्लेख किया गया है। प्रत्यक्ष और परोक्ष ज्ञान भी बताया गया है। पांच ज्ञान के अलावा नय और प्रमाण भी महत्वपूर्ण विषय हैं जो इसमें की गयी है। सातनय और प्रमाण को भी यहाँ समझेंगे।

दूसरे अध्याय में जीव तत्व का वर्णन किया गया है, उसमें जीव के भाव कितने होते हैं, भेद और प्रभेद के बारे में भी बताया है। इन्द्रियाँ और शरीर, जाति और मृत्यु, मृत्यु के बीच वाली स्थिति, आयुष्य कितनी होती है कैसे बंधती है, ये सारी बातें इसमें बतायी गयी हैं।

फिर तीसरे अध्याय में अधोलोक का वर्णन है। अधोलोक मतलब सातों नरक का वर्णन है। नरक में कौन से जीव जाते हैं, सात नरक कैसे हैं, उनकी भौगोलिक स्थिति कैसी है। यह जो शास्त्र है इसमें खगोल, भूगोल, सिद्धान्त सब कुछ बताया गया है। तो पूरे लोक का वर्णन किया गया है। अधोलोक के बाद इसमें मध्यलोक का भी वर्णन किया गया है। मध्यलोक में टाईद्वीप के बारे में हम जानेंगे। कितने द्वीप समुद्र हैं, कितने मेरु पर्वत हैं, कितने क्षेत्र हैं, कहाँ भरत क्षेत्र है, कहाँ ऐरावत है कहाँ विदेह क्षेत्र है, ये सारी जानकारी इसमें बतायी गयी है।

फिर चैथे अध्याय में देवलोक यानि उध्वलोक का वर्णन है। देवता के कितने प्रकार होते हैं, कैसे-कैसे देवता होते हैं, उनके विमान कितने और कैसे होते है।, पूरा खगोल का वर्णन हमें यहाँ मिलेगा। मतलब कहाँ उनके विमान होते है।, किसके ऊपर किसका होता है, सारा वर्णन देवों के प्रकार उनकी जातियाँ उनके कार्य उनके आयुध, उनका रहन-सहन, उनका परिवार, देवताओं की समृद्धि कैसी होती है, उनका ज्योतिमण्डल कैसा होता है। ये सारा कुछ चैथे अध्याय में बताया गया है।

फिर पांचवें अध्याय में अजीब तत्व के बारे में बताया गयाहै। इसमें धर्मास्तिकाय है अधर्मास्तिकाय है, आकाशास्तिकाय है, पुद्गल द्रव्य है, काल द्रव्य है, ये पाँचों द्रव्य या जिन्हें पंचास्तिकाय हैं उनका वर्णन इसमें बताया गया है। हर एक द्रव्य की उत्पत्ति का कारण उनकी पौराणिक अवस्था कैसी होती है, कौन से द्रव्य में कौन सी योग्यता होती है, कौन सा द्रव्य क्या करता है, उसका उपयोग कैसा होता है, उसका परिणमन कैसे होता है सारी बातें इसमें आ जाती हैं।

छठे से दसवें अध्याय में चरित्र की बातें बतायी गयी हैं। छठे अध्याय में आश्रव तत्व का वर्णन किया गया है। आश्रव का स्वरूप आश्रव का भेद, आश्रव यानि क्या कर्मों का आना, कर्मों का आत्म के पास आगमन होना जैसे दरवाजा खिड़कियाँ खुली हैं वहां से हवा आती है, हवा के साथ कचरा भी आता है, आने की जो क्रिया है उसको आश्रव कहते हैं। असमानता श्रवतिइति आश्रवः' यानि चारों ओर से आने की क्रिया या ग्रहण करने की क्रिया होती है उसे आश्रव कहा जाता है। तो ऐसे आश्रव कितने होते हैं, कैसे होते हैं, उन आश्रव के भेद प्रभेद इस अध्याय में किये गये हैं।

सातवां अध्याय जो है उसमें श्रावक के बारह व्रतों का वर्णन किया गया है। यह व्रत कैसे होते हैं, उनके अतिचार कौन से होते हैं, उन व्रतों को कैसे स्थिर रखना चाहिए, व्रतों की स्थिरता रखने के लिए 25 प्रकार की भावनाएँ होती हैं उन भावनाओं का भी वर्णन उसमें किया गया है।

आठवां जो अध्याय है उसमें आठ कर्म प्रकृति का वर्णन किया गया है। इसमें बन्ध का स्वरूप बताया गया है। कर्म क्या है, कर्म की प्रकृतियाँ कितनी हैं, कर्म के प्रकार कितने होते हैं, उनका बन्ध कैसे होता है, बन्ध के हेतु कारण क्या होते हैं, कौन-कौन से कर्म से कौन-कौन से कर्म बंधते हैं, कितनी देर तक कर्म उस आत्मा पर रहती है, कैसे वह उस कर्म छोड़कर जा सकते हैं, कर्म से मुक्त कैसे हो सकते हैं।

फिर नवें अध्याय में संवर और निर्जरा इन दोनों तत्वों का वर्णन है। जो आश्रव आ रहे हैं, जो कर्म हमारे पास आ रहे हैं तो उन कर्मों को हम कैसे रोक सकते हैं। संवर के प्रकार कैसे होते हैं, कैसे संवर किया जाता है, यह सारी बातें उसमें बतायी हैं। और संवर होने के बाद निर्जरा जो पहले कर्म बंध चुके हैं उनको हम कैसे बाहर निकाल सकते हैं, निर्जरा के प्रकार कैसे होते हैं, कौन से प्रकार से निर्जरा होती है। निर्जरा में ही बारह प्रकार के तपों का वर्णन आता है। तप का वर्णन भी इसमें आयेगा। तो कर्ममुक्त की अवस्था हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

दसवें अध्याय में सबसे कम सूत्र हैं। उसमें सिर्फ मोक्ष तत्त्व के बारे में बताया गया है। मोक्ष तत्त्व में हम, हमारी अवस्था, तेरहवें चैदहवें गुण स्थान की अवस्था कैसी होती है। उन मोक्ष तत्त्व को प्राप्त करने की योग्यता कैसे पायी जाती है, कैसे हम शुक्ल ध्यान में आगे बढ़ सकते हैं। जीव की अवस्था कैसे ऊपर-ऊपर तक चढ़ती है और मोक्ष में कैसे सिद्ध अवस्था की प्राप्ति होती है। तो इस सिद्ध गति का सम्पूर्ण अध्ययन इसमें आता है। जीव से लेकर मोक्षज्ञ तत्व का

वर्णन इन दसों अध्यायों में किया गया है। तो तत्वार्थ सूत्र के अध्ययन से जैन धर्म के आधारभूत जो नवतत्व हैं उनका गहन ज्ञान एवं अभ्यांतर तप, तप रूपी स्वाध्याय भी हम कर सकते हैं। क्योंकि जब हम इन सूत्रों का पारायण करते हैं तब हमारी सच्ची स्वाध्याय होगी। सच्ची स्वाध्याय इसलिए क्योंकि जब एक भी सूत्र का अर्थ करेंगे तो उसका गहन चिन्तन मनन करेंगे, चिन्तन करते-करते अवगाहन में चले जायेंगे तो इस प्रकार बहुत बड़ा स्वाध्याय इसके माध्यम से होता जायेगा।

तत्वार्थसूत्र ग्रंथ की विशेषताएं-

यह सर्वसम्मत है कि यदि कोई भी साहित्य हिंदी साहित्य जगत में उत्कृष्टता को प्राप्त होता है तो उसमें अवश्य ही कोई न कोई विशिष्टता पाई जाती है। उसकी यह विशिष्टता चाहे वह छंद अलंकार योजना रचना से संबंधित हो या फिर उसके विषय में या भाषा शैली को लेकर के हो। जैन साहित्य जगत में तत्वार्थसूत्र की भी प्रसिद्धि उसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं को लेकर के हैं इनमें से कुछ विशेषताओं को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है-

•जिस काल में इस ग्रंथ को रचा गया उस समय प्राकृत, अर्धमागधी, पाली भाषाओं का चलन था ऐसे में आचार्य श्री उमास्वामी ने संस्कृत भाषा में सर्वप्रथम जैनागम लिखकर इतिहास रच दिया।जैन साहित्य परंपरा में संस्कृत भाषा का यह सबसे पहला सूत्र ग्रंथ माना जाता है।

• इस ग्रंथ का संकलन इतना सुसम्बध्द और प्रामाणिक साबित हुआ कि भगवान महावीर की द्वादशांग वाणी की तरह ही यह जैन दर्शन का आधार स्तंभ बन गया।

•न्याय दर्शन में न्याय सूत्रों को, वैशेषिक दर्शन में वैशेषिक सूत्रों को, मीमांसा दर्शन में जैमिनी सूत्रों को, वेदांत दर्शन वादरायण सूत्रों को और योग दर्शन में योग सूत्रों को जो स्थान प्राप्त है वही स्थान जैन दर्शन में इस सूत्र ग्रंथ को प्राप्त है।

• इस ग्रंथ पर आचार्य पूज्य पाद स्वामी की सर्वार्थसिद्धि टीका सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध टीका मानी जाती है।

• जैन आम्नाय में तो इसके पाठ मात्र से एक उपवास का फल बतलाया है।

•'परस्परोपग्रहों जीवानाम्' यह सूत्र जैन धर्म का आदर्श वाक्य है। यह जैन प्रतीक चिन्ह के अंत में लिखा जाता है। इसका अर्थ है आपस में एक दूसरे का उपकार करना जीवों का कर्तव्य है या धर्म है।

• तत्वार्थसूत्र में प्रमेय (जो प्रमाण का विषय हो) का उत्तमता के साथ संकलन किया गया है।इस कारण इसे निर्धारित परंपरा के सभी संप्रदायों ने समान रूप से अपनाया है।

• इसमें सबसे छोटा सूत्र 'नाणो' मात्र दो अक्षरों से बना है अधिकांश सूत्र पांच सात शब्दों के हैं।अधिक दीर्घ सूत्र मात्र तीन या चार हैं- तीर्थंकर प्रकृति के बंधन हेतु का, व(2) नाम कर्म की 93 प्रकृतियों का और (3) बाईसवें परिषहों का सूत्र आदि।

तत्वार्थसूत्र के व्याख्या ग्रंथों की समीक्षा-

किसी भी साहित्य के सिध्दांतों एवं भावनाओं को सुगमतापूर्वक जनमानस तक पहुंचाने के लिए उनका अर्थ,अनुवाद,व्याख्या,वृत्ति आदि का कार्य उन साहित्य के विशेषज्ञों,आचार्यो,विद्वानों के द्वारा अत्यन्त ही कुशलतापूर्वक किया जाता है। वैसे ही जिस समय या काल में जिस भाषा का चलन रहा विद्वानों ने आवश्यकतानुसार तत्वार्थसूत्र के सूत्रों का जनसाधारण की भाषा में रूपांतर कर लोगों को उनके मूल उद्देश्यों को समझाने का प्रयत्न किया इसीलिए आज तत्वार्थसूत्र पर अनेकों टीकायें एवं साहित्य उपलब्ध हैं। इस ग्रन्थ पर इतने काल में अनेक भाष्य, वृत्ति, टीकाएं आदि लिखी गई। कतिपय प्रमुख कृतियां इस प्रकार हैं-

1. वाचक उमास्वामी कृत तत्वार्थाधिगम भाष्य (संस्कृत);
2. समंतभद्र आचार्य (ई. 2) विरचित 9600 श्लोक प्रमाण गंधहस्ति महाभाष्य,
3. श्री पूज्यपाद आचार्य (ई.श. 50) विरचित सर्वार्थसिद्धि,

4. योगींद्र देव विरचित तत्व प्रकाशिका (ई.श.6)
5. श्री अकलंक भट्टाचार्य (ई.620-680) विरचित तत्वार्थराजवार्तिक,
6. श्री अभयनंदि आचार्य (ई.श.10-11) विरचित तत्वार्थवृत्ति,
7. श्री विद्यानंदि आचार्य (ई.775-840) विरचित श्लोकवार्तिक ।
8. आ. शिवकोटि आचार्य (ई.श.11) द्वारा रचित रत्नमाला नामकी टीका ।
9. आ. भास्करनंदि (ई.श. 12) कृत सुखबोध नामक टीका ।
10. आ. बालचंद्र (ई.श. 13) कृत कन्नड़ टीका ।
11. विबुधसेनाचार्य (?) विरचित तत्वार्थ टीका ।
12. योगदेव (ई.1579) विरचित तत्वार्थवृत्ति।
13. प्रभाचंद्र आचार्य नं. 8 (ई.1432) कृत तत्वार्थ रत्नप्रभाकर
14. भट्टारक श्रुतसागर (वि.श. 16) कृत तत्वार्थवृत्ति (श्रुत सागरी) ।
15. द्वितीय श्रुतसागर विरचित तत्वार्थ सुखबोधिनी ।
16. पं. सदासुख जी (ई.1793-1863) कृत अर्थ प्रकाशिका नाम टीका ।
17. पं. बुधजन जी कवि जयपुर (विक्रम संवत १८२०- वि. सं. १८९५ अनुमानित) द्वारा विरचित- तत्वार्थबोध टीका

इनके अतिरिक्त श्वेताम्बराचार्य सिद्धसेनगणि और हरिभद्र सूरि की टीकाएं भी उल्लेखनीय हैं।
जिनमें से कुछ प्राचीन एवं प्रसिद्ध टीकाओं का अत्यंत संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है।

सर्वार्थसिद्धि-

उपलब्ध साहित्य में आचार्य पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित सर्वार्थसिद्धि प्रथम टीका मानी जाती है जो कि तत्वार्थसूत्र पर लिखी गई है। प्रत्येक अध्याय के अंत में स्वयं आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने समाप्ति सूचक पुष्पिका दी है- "इति सर्वार्थसिद्धि संज्ञकायां तत्वार्थवृत्तौ प्रथमोऽध्यायः समाप्तः।" सर्वार्थसिद्धि इस नाम के रखने का प्रयोजन यह है कि इसके मनन करने से सब प्रकार के अर्थों की अथवा सब अर्थों में श्रेष्ठ मोक्ष की सिद्धि प्राप्त होती है। सर्वार्थसिद्धि एक वृत्ति ग्रंथ है। वृत्तिकार ने भी इसे वृत्ति ही कहा है। जिसमें सूत्र के पदों का आश्रय लेकर पद घटना के साथ प्रत्येक पद का विवेचन किया जाता है उसे वृत्ति कहते हैं। वृत्ति का यह अर्थ सर्वार्थसिद्धि में अक्षरशः घटित होता है। सूत्र का शायद ही कोई पद हो जिसका इसमें व्याख्यान नहीं किया गया हो।

तत्वार्थराजवार्तिक-

इस ग्रंथ के मंगलपद्य के चतुर्थ चरण में 'वक्षे तत्वार्थवार्तिक' लिखकर आचार्य अकलंकदेव ने इस ग्रंथ को 'तत्वार्थवार्तिक' कहा है।तत्वार्थसूत्र के प्रत्येक सूत्र पर वार्तिक रूप में व्याख्या लिखे जाने के कारण यह तत्वार्थवार्तिक कही गई है। आचार्य अकलंकदेव की विशेषता यह है कि उन्होंने तत्वार्थसूत्र के सूत्रों पर वार्तिक रचे और वार्तिकों पर भाष्य भी लिखा है। इस तरह इस ग्रंथ में वार्तिक प्रथक् हैं और उनकी व्याख्या-भाष्य अलग है। यह ग्रंथ तत्वार्थसूत्र की व्याख्या होने के कारण 10 अध्यायों में विभक्त है। जिसका विषय भी तत्वार्थसूत्र के विषय के समान ही सैद्धांतिक और दार्शनिक है। तत्वार्थसूत्र के प्रथम तथा पंचम अध्याय में क्रमशः ज्ञान एवं द्रव्यों की चर्चा आई है और ये दोनों विषय भी दर्शनशास्त्र के प्रधान अंग हैं।अतः अकलंकदेव ने इन दोनों अध्यायों में अनेक दार्शनिक विषयों की समीक्षा की है।तत्वार्थराजवार्तिक की एक प्रमुख विशेषता यह है कि जितने भी मंतव्य इसमें चर्चित हुए, उनका समाधान अनेकांत के द्वारा किया जाता है।अतः दार्शनिक विषयों के सम्बद्ध सूत्रों के व्याख्यान में 'अनेकान्तात्' वार्तिक अवश्य पाया जाता है।

तत्वार्थश्लोकवर्तिकालंकार -

ज्ञान के चरमोत्कर्ष को प्राप्त रत्न से विभूषित महर्षि विद्यानंद आचार्य ने तत्वार्थसूत्र पर प्रस्तुत ग्रंथ पद्यरूप में लिखा है शायद यही वजह रही होगी कि इस ग्रंथ को तत्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार के नाम से अलंकृत किया गया ।आचार्य श्री ने इस ग्रंथ में तत्वार्थ की टीका के साथ भारतीय षड्दर्शन को प्रस्तुत किया है तथा अनेकांत दर्शन को प्रस्तुत किया है।

इस तरह आचार्य पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि और आचार्य अकलंक देव कृत तत्वार्थराजवार्तिक अपनी प्राचीनता प्रमाणिकता एवं विशाल गांभीर्य और विस्तार आदि गुणों के लिए श्रेष्ठ टीकाएं मानी जाती हैं।

तत्वार्थवृत्तिः-

16वीं शताब्दी के प्रसिद्ध जैनाचार्य श्रुतसागर सूरी द्वारा विरचित तत्वार्थवृत्तिः टीका भी विशद गंभीर टीका है जो 9000 श्लोक प्रमाण है। यह मोटे तौर पर पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि की व्याख्या है। आचार्य श्रुतसागर सूरी ने तत्वार्थसूत्रकार आचार्य श्री उमास्वामी के साथ आचार्य श्री पूज्यपाद, आचार्य श्री प्रभाचंद्र आचार्य श्री विद्यानंदी और आचार्य श्री अकलंकदेव का भी स्मरण किया है।

समस्या विवरण-

यह सत्य है कि तत्वार्थसूत्र पर भी सदियों से अनेकों शोध कार्य संपन्न हुए हैं चाहे वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण को, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को या फिर दार्शनिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर किये गये हों। जिसके परिणाम स्वरुप इन सभी शोध कार्य या शोध प्रबंधों से हमारे समाज को एक नई दिशा मिली और आज भी सदियों पुराना साहित्य हमारे बीच जीवंत है। अनेकों विद्वानों ने अपने अथक परिश्रम एवं प्रयासों से जो शोध कार्य उस समय संपन्न किए वह उस समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किए गए। आज वर्तमान में जो अनुसंधान इस विषय पर किए जाएंगे वह वर्तमान की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किए जाएंगे। आज हमारा समाज बहुत सारी चुनौतियां एवं समस्याओं से जूझ रहा है जैसे -अनैतिकता , अवसाद,शराब और नशीली दवाओं का सेवन, हिंसा, व्यभिचार,आतंकवाद आदि। ऐसे में तत्वार्थसूत्र का अध्ययन एवं इसके मौलिक सिद्धांत अत्यंत ही उपयोगी साबित हो सकते हैं।

तत्वार्थसूत्र को लेकर जब हमने एक सर्वे किया कि आखिर इतना प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रंथ होने के बावजूद वर्तमान में लोगों को इसके बारे में इतनी जानकारी क्यों नहीं है जितनी वास्तव में होनी चाहिए और यदि अच्छे साहित्य और कन्वेनर उपलब्ध हैं तो भी लोग इसके इसके मूल सिद्धांतों को अपनी जीवनशैली में क्यों नहीं अपना रहे? इन सब को ध्यान में रखते हुए एक सर्वे के आधार पर हमने कुछ बिंदु तैयार किए हैं जो कि यहां पर प्रस्तुत है -

- धार्मिक विषयों में रुचि का अभाव
- टीका ग्रंथों का विशालकाय होना
- विज्ञान के साथ धार्मिक विषयों को जोड़ना
- आंखों देखी पर अधिक विश्वास
- धर्म में भी मनोरंजन खोजना
- विषयों का समझ में ना आना
- भाषागत समस्या
- समयाभाव
- अत्याधुनिकीकरण
- जीवनशैली में बदलाव
- जीवन में समस्या आने पर धर्म या ईश्वर पर से विश्वास उठ जाना

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तत्वार्थसूत्र के सूत्रों की उपयोगिता-

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि यह साहित्य 10 भागों में विभक्त है और सभी अध्याय में अलग-अलग विषय प्रतिपादित किए गए हैं।

दसों अध्याय में कुल मिलाकर लगभग 357 सूत्र हैं वर्तमान समय में इन सूत्रों की क्या उपयोगिता है यहां पर हम यह कुछ ही उदाहरणों के माध्यम से जानेंगें। अभी अध्याय 9 के सूत्र नंबर संख्या 6 यहां पर ले लेते हैं-

उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयमतपस्त्यागाकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणिधर्मः (9/6)

अन्वयार्थ : उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम सत्य, उत्तम शौच, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य यह दस प्रकार का धर्म है ।

इसी ग्रंथ के नवें अध्याय के छठे सूत्र में आचार्यश्री ने दस प्रकार के कर्तव्यों के निर्वहन करने का उपदेश दिया है। ये वे कर्तव्य हैं जो प्रत्येक मनुष्यों को आत्मसात कर लेना चाहिए। ये वे कर्तव्य हैं जो प्रत्येक मनुष्यों को अपने जीवन में उतार लेना चाहिए। आचार्यों ने इन्हें दश धर्म की संज्ञा दी है। धर्म शब्द के कई स्वरूप होते हैं। एक तो वह धर्म जो धारण किया जाये, एक वो है जो वस्तु के गमन में सहायक होता है, एक धर्म वो है जो वस्तु के स्वभाव से सम्बन्धित है, जैसे अग्नि का स्वभाव जलाना, पकाना, प्रकाश करना, पानी का स्वभाव शीतलता, दाह को बुझाना। और एक ये दस प्रकार के धर्म भी हैं जो मोक्ष मार्ग में ले जाने में सहायक हैं, जो श्रावकों के धारण या पालन करने योग्य हैं।

1. उत्तम क्षमा धर्म हमें सीखाता है कि सभी विपरीत परिस्थितियों में हमें समताभाव रखना चाहिए। कोई कितना भी हमारा अहित करे उसके प्रति क्रोध न करें क्योंकि भगवान महावीर स्वामी ने बतलाया है 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' क्षमा वीरों का कार्य है। क्रोध कषाय हमें नरक में ले जाने वाला है अतः हमेशा क्षमा धर्म का पालन करते रहना चाहिए।
2. उत्तम मार्दव- अन्दर, बाहर, मन, वचन, काय से नम्रता धारण करना चाहिए और अहंकार पर विजय पाना ही मार्दव धर्म है। अधिकतर कुल जाति बल रूप विद्या ऐश्वर्य धन आदि के निमित्त् से अहंकार उत्पन्न होता है, यह सब बातें कल्पित और विनश्वर हैं, ऐसा जानकर चित्त में अहंकार पैदा नहीं करना भी मार्दव है।
3. उत्तम आर्जव- सीधा सरल स्वभाव का होना एवं मन, वचन और काय की कुटिलता का न होना आर्जव है। अर्थात मायाचार पूर्ण व्यवहार से अपने को दूर रखना चाहिए।
4. उत्तम शौच- जहाँ लोभ का अभाव होगा वहाँ शौच धर्म होगा।
5. उत्तम सत्य- हित मित प्रिय वचन बोलना सत्य धर्म का पालन करना है। ऐसा सत्य न बोलना जिससे दूसरे की हानि हो। हमेशा सत्य वचन बोलना, अपने वचनों से किसी व्यक्ति का अहित न करना ही सत्य धर्म है।
6. उत्तम संयम- वास्तव में सम्यक प्रकार से अपने शुद्ध स्वरूप में स्थिर रहना संयम है। संयम दो प्रकार का है- इन्द्रिय और प्राणी। षट्काय जीवों की रक्षा करना प्राणी संयम एवं इन्द्रियों के विषयों में राग न होना इन्द्रिय संयम है। संयम से ही संसार परिभ्रमण मिटता है।
7. उत्तम तप- कर्मों की निर्जरा करने के लिए अनशन आदि 12 प्रकार के तप करना उत्तम तप धर्म है। तप के द्वारा इन्द्रियों पर काबू पाया जा सकता है। इंद्रियों को संयमित करना ही तप है। यह तप हमारी आत्मा को शुद्ध निर्मल और पवित्र बनाती है।
8. उत्तम त्याग- सिर्फ परिग्रहों को न ग्रहण करना ही त्याग नहीं है अतएव विषय कषाज्ञाय राग द्वेष बुरे विचारों को छोड़ना भी त्याग है। आवश्यकता से अधिक चीजों का संग्रह पाप का कारण है, दुःख का भी कारण है। अतः जितना जरूरी है उतना ही संग्रह करना चाहिए और यदि जरूरत से अधिक सामान इकट्ठा हो जाये तो उसका दान कर देना चाहिए। अधिक धन संचय भी दुःख का कारण है, अतः आवश्यकता से अधिक धन संचित होने पर उसे मन्दिर आश्रम आदि जगहों पर लगा देना चाहिए, जिससे मानव जाति का कल्याण हो सके।
9. उत्तम आकिंचन- न तो अपने शरीर से न तो किसी भी वस्तु से मोह करना चाहिए। मेरा कुछ भी नहीं ऐसा जो मानता है उसी को आकिंचन धर्म होता है।

10. उत्तम ब्रह्मचर्य- विषयों में राग अनुराग का भाव न करना, स्त्री पुरुषों की विकथाओं में आनन्द न लेना, सहवास स्मरण तथा कथा आदि का सर्वथा त्याग करके सुगुप्त रहना उत्तम ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य का साधक समस्त स्त्रियों में माता, बहन और पुत्री का भाव रखता है और स्त्रियाँ पुरुषों के प्रति भाई एवं पुत्र की दृष्टि रखती हैं।

इस प्रकार इन दश धर्मों का पालन भी वर्तमान में बहुत उपयोगी है। इनका पालन सिर्फ धार्मिक दृष्टियों से ही नहीं अपितु सामाजिक दृष्टि से भी अति उत्तम एवं कल्याणकारी है। इसी तरह से और भी सूत्र हैं जो कि वर्तमान संदर्भ में बहुत ही उपयोगी हैं किंतु यहां पर सभी का वर्णन करना संभव नहीं है।

शोधकार्य का उद्देश्य-

किसी भी विषय पर जब एक शोध क्रिया प्रारंभ की जाती है तब वहीं से एक सोच की प्रक्रिया प्रारंभ होती है जो कि आगे चलकर कल्पना ,संकल्पना और परिकल्पना का रूप ले लेती है। जब ये परिकल्पनाएं एक निश्चित आधार को पा लेती हैं तब अनुसंधान का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है। यह उद्देश्य समाज, देश और राष्ट्र के हित में होता है तथा ज्ञान को वृद्धिंगत करने वाला होता है। यह सत्य है कि तत्त्वार्थसूत्र पर भी सदियों से अनेकों शोध कार्य संपन्न हुए हैं चाहे वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण को, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को या फिर दार्शनिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर किये गये हों। जिसके परिणाम स्वरुप इन सभी शोध कार्य या शोध प्रबंधों से हमारे समाज को एक नई दिशा मिली और आज भी सदियों पुराना साहित्य हमारे बीच जीवंत है। अनेकों विद्वानों ने अपने अथक परिश्रम एवं प्रयासों से जो शोध कार्य उस समय संपन्न किए वह उस समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किए गए। आज वर्तमान में जो अनुसंधान इस विषय पर किए जाएंगे वह वर्तमान की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किए जाएंगे।हमने पहले एक सर्वे का आंकड़ा प्रस्तुत किया है जिसको ध्यान में रखकर हम इस अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे।

1.वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तत्वों का तार्किक विवेचन

2वर्तमान को ध्यान में रखते हुए कर्म सिद्धांत पर चर्चा की जाएगी।.

3 वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक तथ्यों के आधार पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए यह सिद्ध करना कि. तत्त्वार्थसूत्र के वाचन एवं अध्ययन का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

4आधुनिक उपकरणों द्वारा प्रस्तुत ग्रंथ की प्रभावना की जाएगी. ।जैसे -

- अनुप्राणन या एनिमेशन द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियों की छवियों के माध्यम से अर्थों को स्पष्ट करना
- ग्रंथ सूत्र के उच्चारण एवं अनुवादों को समझने के लिए Talking book या बोलने वाली पुस्तक पर प्रयोग किया जायगा।

इस ग्रंथ में अणु परमाणु से लेकर जीव अजीव संसार संसार की रचना तथा जीव से सम्बन्धित प्रत्येक पहलुओं को छुआ गया है। यदि एक एक सूत्र को भलीभांति समझा जाये तो जीवन के अनेक रहस्यों की गुत्थियां सुलझती जाती है। इसमें ध्यान है, अध्यात्मक है, विज्ञान है, मनोविज्ञान है, अनेकांत है। आज अनेक समस्याओं से जूझता मानव यदि ऐसे ग्रंथों का अध्ययन करे तथा नय एवं अनेकांत की दृष्टि अपनाए तो जीवन कहीं और बेहतर हो सकता है, कुछ एक समस्याओं का निराकरण स्वयमेव हो सकता है। ऐसे प्राचीन श्रेष्ठ ग्रन्थ के सिद्धान्तों को वैज्ञानिक तकनीकी के माध्यम से सहज एवं सरल रूप में प्रतिपादित करने का प्रयास इस शोध कार्य के द्वारा करने का अभिप्राय है।आगे इस साहित्य के माध्यम से अनेकों नए आयाम भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। जिसको आगे शोध प्रबंध में प्रस्तुत किया जाएगा।

Bibliography-

1. आचार्य श्री पूज्यपाद विरचित सर्वार्थसिद्धि वि.की दूसरी या तीसरी श. संपादन- सिद्धांताचार्य पं. फूलचंद शास्त्री, प्रकाशन- भारतीय ज्ञानपीठ।

2. भट्ट अकलंकदेव विरचित तत्वार्थराजवार्तिक सातवीं.आठवीं श- संपादक-प्रो.महेंद्र कुमार जैन न्यायाचार्य, प्रकाशक- दुलीचंद बाकलीवाल यूनिवर्सल एजेंसीज,देरगांव (आसाम)।

3. आचार्य श्री विद्यानन्दि विरचित तत्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार नवीं श. संपादक- डॉ .चेतन प्रकाश पाटनी जोधपुर,

प्रकाशक- गुलाबचंद सुरेश कुमार पाटनी गुवाहाटी (असम)।
4. आचार्य श्रुतसागर कृत तत्त्वार्थवृत्ति .सोलवीं श (श्रुतसागरी) पाठ संपादक- प्रो.महेंद्र कुमार जैन न्यायाचार्य, प्रकाशक- गुलाबचंद पाटनी कोलकाता। सुनयना जैन (शोधार्थी, जैनदर्शन) तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद उ.प्र.